# बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
## बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

## मौसम आधारित कृषि सलाह
**(Agro-Weather Advisory Bulletin No.: 89/2023) Year: 5th**
**September 1-15, 2023**

| जिला: बाँदा | जारी करने की तिथि: 04/09/2023 |
|---|---|

| क्रम सं | विभाग | सलाह |
|---|---|---|
| 1- | शाक-भाजी | ➢ प्रचुर मात्रा में कंपोस्ट प्रयोग करके खेत की तैयारी कर लें, मेड़ी अथवा उठी हुई क्यारियां तैयार करके कद्दू , खीरा, लौकी, तरोई, चिचिंडा, करेला आदि, लोबिया, ग्वार, भिंडी तथा चौलाई की बुआई तथा बैगन, टमाटर, मिर्च आदि की रोपाई करें । कद्दू वर्गीय सब्जियों की बुआई मेड़ों को काली पॉलीथिन शीट से ढकने के बाद निर्धारित दूरी पर छेद में करें ताकि प्रभावी ढंग से मृदा नमी एवं पोषण प्रबंधन व खर- पतवार नियंत्रण हो सके। बाद में बेलियों को पांडाल बनाकर चढ़ा दें ताकि वर्षा के दुष्प्रभाव से फसल व फलों को बचाया जा सके।<br>➢ यदि टमाटर, बैगन, मिर्च, अगेती पत्ता गोभी आदि की पौधशाला तैयार न हो तो अविलंब बुआई कर दें ।<br>➢ बेमौसमी मूली, पालक की भी उठी हुई क्यारियों अथवा मेडियों पर बुआई कर सकते हैं।<br>➢ अवृष्टि की स्थिति में अल्प मात्रा में ही सही किंतु एक निश्चित अंतराल पर सिंचाई अवश्य करें। |
| | | |
| 2- | शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन | ➢ इस मौसम की फसलों में खरपतवार की समस्या अधिक होती है। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से इस पर नियंत्रण रखा जा सकता है ।<br>➢ इस समय कृषित एवं आकृषित भूमि पर, घरों के आस पास, सड़क के किनारे आदि जगहों पर गाजर की तरह पत्ती वाला सफ़ेद फुलयुक्त पौधा बहुतायत में पाया जाता है।<br>➢ इस पौधे को गाजरघास य पार्थेनियम कहा जाता है । यह एक सामाजिक समस्या है और इसका निवारण सामाजिक सहयोग से ही हो सकता है।<br>➢ गाजरघास मानव, फसल एवं पशु स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है इस पौधे को जड़ सहित उखाड़ फेंकना चाहिए इसे उखारते समय इसके सीधे संपर्क में आने से बचना चाहिए।<br>➢ इसके रोकथाम के लिए ग्लाय्फोसेट नामक रासायनिक खरपतवारनाशी की १०० मिली मात्रा प्रति टैंक (१५ ली ०) पानी की दर से मौसम साफ़ रहने पर छिड्काव करें।<br>➢ धान की फसल में कल्ले बनने की अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है इस अवस्था में समुचित जल प्रबंधन अति आवश्यक होता है जल की ५ से ८ सेमी गहराइ हमेशा बनाये रखना चाहिऐं।<br>➢ ४० से ५० किग्रा यूरिया प्रति एकड़ की दर से कल्ले बनने की अवस्था पर प्रयोग करना चाहिऐं।<br>➢ पोटाश की कमी के लक्षण दिखने पर १०-१५ किग्रा एम्० ओ० पि० प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें । |

| | | |
|---|---|---|
| | | ➢ ०.५ प्रतिशत पोटाश के घोल का छिड़काव भी धान की फसल के लिए लाभदायक होता है ।<br>➢ धान की सीधी बुवाई में 40 से 50 किग्रा/एकड़ की दर से यूरिया कल्ले फूटने के समय (बुवाई के 35–40 दिन बाद) डालें।<br>➢ बुवाई के 55–60 दिन बाद 40–50 किग्रा0/एकड़ की दर से यूरिया डालें। |
| | | |
| 3- | **पशुपालन प्रबंधन** | वर्षा एवं नमी वाले मौसम में पशुपालकों को अपने पशुओं के स्वास्थ्य व प्रबंधन की अतिरिक्त व्यवस्था करनी होती हे जिसमे कुछ प्रमुख क्रियाकलाप निम्नलिखित हैं<br>1 पशुपालक पशुओं को छायादार, हवादार व ऊँचे स्थानों पर ही बांधें जहाँ पानी न भरे साथ ही नमी की शिकायत न आये।<br>2 नमी वाले स्थानों में पशुओं में त्वचा सम्बन्धी रोगों (Fungal Infection) का खतरा रहता है। वर्षा ऋतू में कृमि का प्रकोप भी बहुतायत में देखा गया है।<br>3 गीले स्थानों में यदि पशु बांधे जाते हैं तो वहां दुधारू पशुओं को थनैला रोग की सम्भावना बनी रहती है क्यूंकि थनेला रोग को फैलाने वाले जीवाणु गीले तथा गंदे स्थानों पर अधिक सक्रिय होते हैं।<br>4 वर्षा ऋतू में अक्सर पशुपालक हरी घास या चारे पर ही पशु को पूर्णतः निर्भर कर देते हैं जोकि पशुओं के पाचन को प्रभावित करता है अतः वर्षा ऋतू में पशुओं को हरे चारे को सूखे भूसे के साथ ही मिलाकर देना चाहिए। |
| 4– | **कीट-प्रबंधन** | ➢ धान में पत्ती लपेटक व तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु कार्बाफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत की 20 किग्रा0 मात्रा को 3–5 सेमी0 पानी में बुरकाव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें अथवा बुप्रोफेजिन 25 प्रतिशत एस0सी0 1–2 मिली0 प्रति लीटर पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।<br>➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2.0 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये।<br>➢ मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें।<br>➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में पत्ती लपेटक कीट के नियंत्रण हेतु खेत एवं मेड़ों को घास मुक्त रखना चाहिये एवं मेड़ों की छटाई करना चाहिये। फसल की |

| | | |
|---|---|---|
| | | साप्ताहिक निगरानी करना चाहिये। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये।<br>➢ उर्द/मूँग में बालदार गिडार के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। 5 गंधपाश (फेरोमैन ट्रैप) प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिए। बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानीमें घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। उर्द/मूँग में पीला मोजैक रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ब्लिस्टर बीटल के नियंत्रण हेतु प्रोफेनोफोस एवं साइपरमेथ्रिन के मिश्रण का 1.5 मिली/ली पानी की दर से छिड़काव करें।<br>➢ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें।पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए। सब्जियों में माइट के नियंत्रण हेतु डाइकोफाल 2.5 मिली0/लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। |
| 5- | **पादप रोग प्रबंधन** | • भिण्डी के पीतशिरा (मोजैक) व पत्ती मरोड़ विषाणु रोग के लक्षण दिखायी देने पर रोग से ग्रसित पौधों को उखाड कर मिट्टी में दबा देना चाहिए यदि समस्या अधिक है तो विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड के 17.8 प्रतिशत एस0एल0 का 3 मिली प्रति 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन अन्तराल पर छिड़काव करें।<br>• उर्द व मूंग के पीले मोजैक विषाणु रोग के लक्षण दिखाई देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें।<br>• धान की फसल में जीवाणु झुलसा (बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट) रोग के लक्षण प्रकट होने पर 100 ग्राम स्ट्रेप्टोसायाक्लिन और 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराईड का 500 लीटर जल में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर छिडकाव करें।10 से 12 दिन के अन्तर पर आवश्यकतानुसार दूसरा एवं तीसरा छिडकाव करें। |

| | | |
|---|---|---|
| | | • सब्जियों जैसे फूलगोभी, टमाटर, मिर्च, व बैगन की पौधशाला मे पौधगलन रोग की समस्या आने पर किसान भाई कॉपर ऑक्सीक्लोराईड (ब्लाईटाक्स 50) का 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी अथवा साफ (कार्बेण्डाजिम 12 प्रतिशत+ मेन्कोजेब 63 प्रतिशत) का 2 ग्राम प्रति लीटर पानी का भली प्रकार से छिड़काव करें।<br>• अदरक व हल्दी की फसल में प्रकन्द सड़न रोग के लक्षण दिखाई देने पर खेत में जल निकास की समुचित व्यवस्था करें व रिडोमिल एम. जेड. 72 का 1.5 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बना कर जड़ पर ड्रेचिंग (भली प्रकार) छिड़काव करें। |
| | | |
| 6. | **बागवानी. प्रबंधन** | इस माह भी नये पौधे लगाने का कार्य कर सकते है। पौधे लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई जरूर दें। इस दिन हल्का पानी एक सप्ताह तक और अगले एक सप्ताह तक एक दिन छोड़ कर बाद में आवश्यकतानुसार पानी दें। छोटे पौधों को बंछटी से सहारा देकर सीधा रखें यदि दीमक का प्रकोप हो तो उपचार करें। वायु अवरोधक वृक्ष न लगे हो तो इनका रोपन उत्तर–पश्चिम दिशा में जरूर लगायें। अंतर शस्य फसल में चना तथा मटर बोयें।<br><br>**नींबू वर्गीय फलों में मुख्य कृषि कार्य**<br>➢ नींबू वर्गीय फलों का गिरनाः नींबू वर्गीय फलों में यह मुख्यतः दो कारण से होता है । पादप कार्यकीय कारक – अनियमित सिंचाई व्यवस्था, पोषक तत्वों की कमी, मौसम सम्बन्धी कारक। उपचारः फलों की तुड़ाई के 2 महीने पहले सितम्बर माह में 2,4–डी का 10 पी.पी.एम. घोल का छिड़काव करना चाहिए।<br>➢ नींबू वर्गीय फलों में यदि डाईबैक, स्केब तथा सूटी मोल्ड बीमारी का प्रकोप हो तो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें।<br>➢ कैंकर बीमारी की रोकथाम के लिए पौधों में स्ट्रेप्टोसाइक्लीन तथा कॉपर सल्फेट (5 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन, 10 ग्राम कॉपर सल्फेट/100 लीटर पानी में) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।<br><br>**आम में मुख्य कृषि कार्य**<br>➢ वयस्क आम के पौधों में बची हुई उर्वरक की मात्रा (500 ग्राम नत्रजन, 250 ग्राम फास्फोरस, 500 ग्राम पोटाश) को मानसून की बारिश के पश्चात डाले।<br>➢ आम में गमोसिस रोग की रोकथाम के लिए प्रति पेड़ (10 वर्ष या अधिक आयु के पौधे के लिए) 250 ग्राम जिंक सल्पेफट, 250 ग्राम कॉपर सल्फेट, 100 ग्राम बुझा हुआ चूना व 125 ग्राम बोरेक्स पेड़ के मुख्य तने से एक मीटर की दूरी पर 2–4 मीटर व्यास के अन्दर मिट्टी में मिलायें। वर्षा न होने की स्थिति में तुरन्त हल्की सिंचाई कर दें।<br>➢ आम में एंथ्रेक्नोज रोग से बचाव के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड की 3 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल आवश्यकतानुसार छिड़काव करें।<br><br>**अनार में मुख्य कृषि कार्य**<br>➢ अनार में फलों का फटना एक गंभीर कार्यिकी विकार है। मृग बहार मे यह विकार सबसे ज्यादा होता है। यह विकार अनियमित सिचांई, बोरान तत्व की कमी, फल विकास के समय तापक्रम में अत्याधिक उतार–चढ़ाव के कारण होता है।<br>➢ उचित प्रबंधन के लिए फल बनने से पकने तक नियमित सिंचाई की व्यवस्था, 0.1 प्रतिषत बोरेक्स का पर्णीय छिड़काव, अनार के बगीचे के चारो ओर वायु |

अवरोधी पौधे लगाना काफी प्रभावी रहता है। इसके अलावा किस्में जैसे, बेदाना, खागे, जालौर सीडलेष इस विकार के प्रतिरोधी किस्में है।

**अमरूद मे मुख्य कृषि कार्य**

- अमरूद में इस समय पौध रोपण की जाती है। अकार्बनिक उर्वरकों की आधी मात्रा मई –जून तथा बची हुई आधी मात्रा सितम्बर माह में दी जाती है। इस माह में अमरूद मे मृग बहार का समय है तथा इसमें अभी फल आने की स्थिति है, जो कि नवम्बर जनवरी तक पककर तैयार हो जाते है।
- अमरूद की हिसार सफेदा, हिसार सुरखा, इलाहाबादी सफेदा, बनारसी सुरखा, लखनऊ–49, ललित तथा सरदार किस्मों को सितंबर में लगाया जा सकता है।
- नये बागों की नियमित सिंचाई करें।
- अमरूद में फल मक्खी के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप (मिथाइल यूजेनॉल ल्योर) 10 प्रति एकड़ की दर से पेड़ पर लगावें एवं डायमिथोएट 930 ई.सी./1.0 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

**केले में मुख्य कृषि कार्य**

- केले में प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया पौधे से 50 सें.मी. दूर घेरे में प्रयोग कर हल्की गुड़ाई करके भूमि में मिला दें।
- केला बीटिल की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। कार्बोफ्यूरान 3–4 ग्राम या फोरेट 2.0 ग्राम प्रति पौधे की दर तने के चारों ओर मिट्टी में मिलायें तथा इतनी ही मात्रा गोफे में डालें।
- लीफ स्पाट रोग के रोकथाम हेतु डाईथेन एम–45 के 2.0 ग्राम अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल 2–3 छिड़काव 10–15 दिन के अंतर से करना चाहिए
- केले में यदि बीटल कीट दिखाई दे तो इसके रोकथाम के लिये डाइमेथोएट 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

**आंवला में मुख्य कृषि कार्य**

- आंवला में इन्दर बोल कीट की रोकथाम के लिए डाइक्लोरोवास (नुवान) 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी में बने घोल में रूई भिगोकर सलाई की मदद से छेदों में छालकर चिकनी मिट्टी से बन्द करें।
- आन्तरिक सड़न प्रबंधक के लिए जिंक सल्फेट (0.4 प्रतिशत) कॉपर सल्फेट (0.4 प्रतिशत) तथा बोरेक्स (0.4 प्रतिशत) का छिड़काव सितम्बर–अक्टूबर माह में करना लाभप्रद होता है।

**बेर में मुख्य कृषि कार्य**

- सितंबर में बेर की रोपाई हो सकती है। पौधे निकालने से पहले फालतू पत्ते उतार दें।
- नये पौधे की 17 दिनों के अन्तर पर सिंचाई करें व बेर के पुराने बागों की भी सिंचाई करें।

**करौंदा में मुख्य कृषि कार्य**

| | | |
|---|---|---|
| | | ➢ करौंदा के पके फलों की तुड़ाई करके बीज निकाल लें तथा नए पौधे तैयार करने के लिए बीजों की पौधशाला में बुआई करें।<br><br>**बेल में मुख्य कृषि कार्य**<br>बेल के पेड़ों पर शाटहोल रोग की राकेथाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें। नए बाग लगाने के लिए रोपण का कार्य करें। |
| 7. | **वानिकी प्रबंधन** | ➢ पॉलीथीन थैलियों जिनमें बीज अंकुरित नहीं हुए हैं को स्वस्थ व विकसित पौध से प्रतिस्थापित/प्रत्यारोपित करें।<br>➢ पौधशाला को खरपतवार से मुक्त रखने तथ जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें।<br><br>➢ पौधशाला में आद्रपतन या कमरतोड रोग की रोकथाम हेतु कार्बेन्डाजिम (10ग्राम) +मेन्कोजेब (25 ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल से रोक के लक्षण दिखते ही ि |

## वैज्ञानिक सलाहकार मंडल–

| | |
|---|---|
| 1. डॉ जी. एस. पंवार | 7. डॉ मयंक दुबे |
| 2. डॉ दिनेश साह | 8. डॉ अमित मिश्रा |
| 3. डॉ ए.सी. मिश्रा | 9. डॉ दिनेश गुप्ता |
| 4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव | 10. डॉ पंकज कुमार ओझा |
| 5. डॉ राकेश पाण्डेय | 11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह |
| 6. डॉ विवेक सिंह | |